छाया में दृढ़ीकरण के लिए रख दिया जाता है। दृढ़ीकरण के बाद कलमों को खेत में लगा सकते हैं।

पॉलीथीन से ढ़के स्थान से जड़ों का दिखना गूटी को अलग करने का सही समय है।

जनक पौधे से निकाली गई, दृढ़ीकरण के लिए तैयार गूटी पौधे

पॉलीथीन बैग में गूटी द्वारा सफलतापूर्वक तैयार की गई पौध

गूटी के लाभ

गूटी द्वारा तैयार किए गये पौधे जनक पौधे के समान होते हैं, जैसाकि बीज से तैयार पौधों में संभव नहीं है। इस विधि द्वारा उन्नत किस्म के पौधों का बड़ी मात्रा में गुणन किया जा सकता है। यह तकनीक कलम बॉधने से अधिक सरल है, इसलिए कोई भी किसान इसे आसानी से सीख सकता है। इसके अतिरिक्त गूटी बॉधने के लिए कलम की तरह दो अलग–अलग पौधों की जरूरत नहीं होती। गूटी में इस्तेमाल होने वाले सामान जैसे गोबर की खाद, मिट्टी, दूध के खाली पैकेट आदि किसानों के पास आसानी से उपलब्ध रहते हैं। इसलिए यह एक कम लागत वाली तकनीक है।

चूँकि अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों में मसालों की खेती अधिकतर छोटे किसानों द्वारा की जाती है, गूटी जैसी कम लागत वाली तकनीक किसानों द्वारा दालचीनी की पौध बनाने के लिए वरदान साबित हो सकती है।

For any assistance/guidance and training kindly contact:

Division of Horticulture and Forestry,
ICAR- Central Island Agricultural Research Institute,
Port Blair- 744101, Andaman and Nicobar Islands, India.

Design & Print by: M/s. Bala Graphics, Mohanpura
Ph: 03192-232562 | Cell: 9933276059 | E-mail: mailtobalagraphics@gmail.com

AICRP on Palms Extension Folder -02

अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों के संदर्भ में दालचीनी का गूटी विधि से गुणन

अजित वामन, पूजा बोहरा,
अविनाश नॉर्मन, के. आशा ज्योति

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान,
पो. बॉक्स सं. 181, पोर्टब्लेयर - 744101,
अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

परिचय

दालचीनी भारत में उगाये जाने वाले महत्वपूर्ण मसालों में से एक है। इस पेड़ की पत्तियॉं व छाल दोनों ही सुगंधित होते हैं। इसका इस्तेमाल छाल के टुकड़ों, पाउडर और सुगंधित तेल के रूप में होता है। कई भारतीय व्यंजन दालचीनी के बिना अधूरे हैं। अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों की जलवायु इसके उत्पादन के लिए उपयुक्त है। यहॉं उत्पन्न दालचीनी अपनी गुणवत्ता के कारण जानी–मानी है। चूँकि यह एक छायाप्रिय पेड़ है, इसे नारियल व सुपारी के बगीचों में भी लगाया जा सकता है। इसके अलावा घर के आसपास की जमीन का इस्तेमाल भी इसके लिए किया जा सकता है। इससे किसान को अतिरिक्त लाभ मिल सकता है। दालचीनी को सुखाकर लम्बे समय तक भंडारित किया जा सकता है। इसके अलावा छाल का पाउडर, तेल, पत्तियों का तेल तथा कई अन्य उत्पाद भी इससे बनाए जा सकते हैं।

ताजी निकाली हुई एवं पूरी तरह सूखी हुई छाल

गूटी क्या है?

गूटी पौधों के अलैंगिक प्रजनन की एक तकनीक है, जिसमें एक चुनी हुई शाखा से वृत के आकार में छाल निकालकर उसे मिट्टी या गोबर से ढ़क दिया जाता है। जड़ निकलने पर तैयार पौध को जनक पौधे से अलग कर दिया जाता है।

दालचीनी में गूटी की जरूरत

अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों में दालचीनी का गुणन बीजों से किया जाता है, परन्तु बीज से बने पौधों में बहुत विविधता देखने को मिलती है, चाहे वो पत्तियों का आकार हो या नई आती पत्तियों का रंग। इसका मतलब यह है कि एक पेड़ के बीज से बने पौधे भी अलग–अलग पत्तियों और छाल वाले हो सकते हैं। साथ ही इनमें से कई पेड़ ऐसे भी होते हैं, जिनकी छाल आसानी से नहीं निकलती। ऐसे पेड़ों से छाल निकालने के लिए बहुत लागत लगती है और कई बार किसान इन्हें ऐसे ही छोड़ देते हैं।

दालचीनी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जरूरी है कि किसान अच्छे गुणों वाली प्रजातियों को अपनाऐं। अगर ऐसी प्रजातियों के पौधे कम मात्रा में उपलब्ध हों, तो उन्हें गूटी द्वारा आसानी से गुणित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अच्छी प्रजातियों के पौध ना होने की दशा में किसान स्वयं ही ऐसे पेड़ों का चयन कर सकतें हैं जिनमें काट–छॉंट के बाद उगने की अच्छी क्षमता हो, छाल अधिक मात्रा में और बढ़िया सुगन्ध वाली हो और आसानी से छीली जा सकती हो। ऐसे पेड़ों में गूटी करके तैयार की गई पौध बिल्कुल जनक पौधे के ही समान होती है।

गूटी कैसे की जाती है?

साधारणतया गूटी मानसून के महीनों में बॉंधी जाती है, जिससे अधिक सफलता सुनिश्चित हो सके। द्वीपों के परिवेश में जून से सितंबर तक का समय इसके लिए उपयुक्त है। इसके लिए 25 से 30 सेमी लंबाई और 1 सेमी मोटाई की शाखाऐं चुननी चाहिए। जहॉं पर गूटी बॉंधनी हो, उसके पास की सभी पत्तियों और अन्य शाखाओं को निकाल देना चाहिए। तने पर एक इंच की दूरी पर तेज धार चाकू की मदद से दो वृत्ताकार काट लगाई जाती हैं, जिससे छाल आसानी से निकल सके। छाल निकालने के बाद ऊपर वाली काट पर हॉर्मोन लगा दिया जाता है। रूटिंग हार्मोन लगाने से गूटी बॉंधे पौधों में अच्छी और जल्दी जड़ निकलती हैं। छाल निकाले गये स्थान को मिट्टी और गोबर की खाद या कोकोपीट (1:1) के गीले मिश्रण से ढ़क देना चाहिए। इस मिश्रण की 6 से 8 सेमी मोटी तह में हमेशा नमी बनी रहे, इसके लिए मिश्रण को 20सेमी x 20सेमी आकार के पॉलीथीन या दूध के खाली पाउच से अच्छी तरह ढ़ककर धागे से बॉंध देना चाहिए। ध्यान रहे कि गॉंठ ना ज्यादा ढ़ीली हो और ना ही ज्यादा कसी हुई। लगभग डेढ़ से दो महीने बाद पूर्णतः विकसित जड़ें पॉलीथीन से दिखाई देने लगती हैं। इस अवस्था में गूटी जनक पौधे से अलग की जा सकती है। इसके लिए जड़ आए हुए स्थान के नीचे शाखा को काटकर कलम अलग कर दी जाती है। इन्हें मिट्टीः बालूः गोबर की खाद (1:1:1) से भरे हुए पॉलीथीन बैग में लगाकर

शाखा का चुनाव एवं हॉर्मोन लगाने के लिए निकाली गई छाल वाला स्थान

निकाली हुई छाल वाले स्थान पर मिट्टी व गोबर का मिश्रण रखकर पॉलीथीन से ढ़ककर बॉंध दिया जाता है।